

ful that even such a person could rise to the status of God and is being worshipped. That was a part which he explained; but, ultimately, he apologised and, therefore, nothing is to be done.

श्री यशपाल सिंह : जब कि क्रिश्चियन खुद इस बात को मानते हैं कि हजरत ईसा मसीह खुदा के बेटे थे और उन के बाप का नाम पता नहीं है, तो इस में इस पत्रिका ने क्या गलत बात कही थी ?

अध्यक्ष महोदय : क्या अब हम इन बातों पर यहां बहस करेंगे ।

श्री हाथी : जब उन लोगों ने माफी दे दी है, तब इन बातों से यहां क्या फायदा होगा ।

Shri D. C. Sharma: The Government patronises newspapers, journals, weeklies and monthlies in many ways; for instance, it gives them advertisements. May I know if any action has been taken against this journal so far as Government patronage is concerned?

Shri Hathi: The question of giving advertisements may be referred to the Ministry of Information and Broadcasting. I would not know this.

केन्द्रीय वि.विद्यालय

+

* 857. { श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री यशपाल सिंह :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के संचालन में होने वाले व्यय का कितना भाग केन्द्रीय सरकार देती है और कितना व्यय विश्वविद्यालय स्वयं करता है;

(ख) इन विश्वविद्यालयों के संचालन में प्रशासन तथा देख-रेख के बारे में भारत सरकार का क्या नियंत्रण रहता है और किस एजेंसी के द्वारा होता है, और

(ग) क्या सरकार ने शिक्षा के लिए

एक आदर्श पाठ्यक्रम तैयार करने के लिये कोई कार्यक्रम बनाया है ?

शिक्षा मंत्री (श्री म० क० चागला) :

(क) सेन्ट्रल यूनिवर्सिटीज की देख रेख पर होने वाले खर्च को केन्द्रीय सरकार यू० जी० सी० (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) के जरिये 'घाटा पूरा करो' के आधार पर पूरा करती है तथा उनके विकास पर शत प्रतिशत खर्च करती है ।

(ख) केन्द्रीय सरकार उन यूनिवर्सिटीज पर जो निगमन के अधिनियमों के अनुकूल चलाई जाती है, कोई प्रशासक य तथा देख-रेख का नियंत्रण नहीं रखती है ।

(ग) सभी विश्वविद्यालय स्वायत्त संस्थाएँ हैं, और अध्ययन के अलग अलग पाठ्यक्रमों के लिये पाठ्यचर्या अथवा पुस्तक सूची निर्धारित करने तथा स्वीकार करने में समर्थ हैं ।

श्री म० ला० द्विवेदी : हमारी सरकार का यह निश्चित सिद्धान्त है कि हमारा शासन धर्मनिरपेक्ष है । मैं जानना चाहता हूँ कि जो विश्वविद्यालय केन्द्रीय शासन के अधीन हैं उन के नाम हिन्दू विश्वविद्यालय और मुस्लिम विश्वविद्यालय रखना क्या सरकार की इस नीति के अनुकूल है । यदि यह उन की नीति के अनुकूल नहीं है तो क्या उन के नाम बदलने की दिशा में सरकार कोई कदम उठा रही है ?

Shri M. C. Chagla: The Banaras Hindu University Act is before the Select Committee. I have told the Select Committee that if the majority takes the view to delete the expression 'Hindu', I shall accept it, the Government will accept it, and I will immediately introduce a Bill to remove the expression 'Muslim' from the name of the Aligarh Muslim University. I have left it to the Select Committee. My own views are that it should go. I cannot do it myself. There are strong sentiments on either side. But I will abide by the decision of the majority of the Select Com-

mittee and if Parliament decides to remove the expression 'Hindu'—I had made this promise before and I repeat it—I will have the Aligarh Muslim University Act amended.

श्री म० ला० द्विवेदी : संविधान सभा में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया है कि इस देश की राज भाषा हिन्दी और उस की लिपि देव नागरी होगी । मैं जानना चाहता हूँ कि क्या केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत कोई विश्वविद्यालय देव नागरी के अतिरिक्त रोमन लिपि में भी हिन्दी की पढ़ाई का काम कर सकता है । यह अलीगढ़ विश्वविद्यालय में हो रहा है । मैं जानना चाहता हूँ कि क्या सरकार की सहमति इस के लिये है ।

अध्यक्ष महोदय : आप इतना ही पूछ सकते हैं कि क्या अलीगढ़ विश्वविद्यालय में ऐसा हो रहा है । लेकिन जो लीगल या कांस्टिट्यूशनल क्वेश्चन हैं उन की निश्चयत यहाँ जैसे पूछा जा सकता है ।

श्री रामसेवक यादव : यह हमारे संविधान के विरुद्ध है ।

अध्यक्ष महोदय : यहाँ कांस्टिट्यूशनल क्वेश्चन तो नहीं उठाया जा सकता ।

श्री म० ला० द्विवेदी : क्या यह अजायज है कि कोई विश्वविद्यालय

अध्यक्ष महोदय : आप सिर्फ यह पूछिये कि आया अलीगढ़ विश्वविद्यालय में रोमन लिपि में हिन्दी पढ़ाई जा रही है ।

श्री रामसेवक यादव : उस का जवाब तो दे चुके हैं ।

श्री म० ला० द्विवेदी : मेरे प्रश्न का कोई जवाब नहीं दिया गया ।

अध्यक्ष महोदय : श्री यादव ने कहा कि वे जवाब दे चुके हैं ।

श्री म० ला० द्विवेदी : मैं ने पूछा था कि वहाँ जो रोमन लिपि में हिन्दी पढ़ाई जा रही है उस को बन्द करने का कोई उपाय क्या सरकार के पास . . .

Shri M. C. Chagla: I have answered this question before. In Aligarh University, some students from the south wanted to learn Hindi and the then Vice-Chancellor thought it would be easier for them to learn in the Roman script which they knew, rather than through the Devanagari script. It is true the Constitution talks of Hindi in the Devanagari script, but if we can help the cause of Hindi even by people from the south learning through the Roman script, we should support it rather than run down the Aligarh University.

श्री प्रकाशबीर शास्त्री : मैं एक व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूँ । संविधान में स्पष्ट निर्देश है कि वह हिन्दी जो देव नागरी लिपि में लिखी जायेगी । तो क्या कोई विश्वविद्यालय अपनी स्वायत्तता का यह लाभ भी उठा सकता है कि वह संविधान के आदेशों की अवहेलना करे ।

अध्यक्ष महोदय : हाँ, मैं इस का जवाब देना चाहता हूँ । क्या वहाँ के लड़कों के लिये यह लाजिमी है कि वह हिन्दी के विषय को पढ़ें ।

श्री प्रकाशबीर शास्त्री : नहीं ।

अध्यक्ष महोदय : जब लाजिमी नहीं है कि हिन्दी वे पढ़ें तब यह सवाल कहाँ उठता है । अगर लाजिमी हो हिन्दी का पढ़ना तब तो यह जरूरी है कि वे हिन्दी को उसी लिपि में पढ़ें जो कि देवनागरी में हो । लेकिन वे दूसरे सब्जेक्ट्स के बजाय हिन्दी पढ़ना चाहते हैं तो हिन्दी वालों को तो प्रेरक करन चाहिये कि वे हिन्दी पढ़ने हैं भले ही दूसरा लिपि में पढ़ते हों । इस में उन को ऐतराज नहीं करना चाहिये ।

श्री प्रकाशबीर शास्त्री : सवाल यह है कि केन्द्रीय सरकार का एक संविधान है, केन्द्रीय सरकार का विश्वविद्यालय है, केन्द्रीय सरकार अनुदान देती है, तो केन्द्रीय सरकार की नीति केन्द्रीय सरकार के विश्वविद्यालयों में लागू न हो यह कहाँ तक ठीक है ?

अध्यक्ष महोदय : मैं आप से प्रार्थना कर रहा था कि अगर तो वहां केन्द्रीय सरकार की तरफ से आर्डर हो कि हिन्दी जरूर हर एक को बढ़ाया जाए, और फिर हिन्दी देवनागरी लिपि में न पढ़ायी जाती हो और किसी और लिपि में पढ़ायी जाती हो, तो ऐतराज हो सकता है। जब वहां लड़कों के लिए हिन्दी पढ़ाना लाजिमी नहीं है और फिर भी अगर कुछ विद्यार्थी चाहते हैं कि वे कुछ हिन्दी पढ़ जायें और वे भी हिन्दी को जान लें, और उन के लिये कोई इन्तिजाम कर दिया जाए तो हिन्दी वालों को क्यों [ऐतराज होना चाहिए यह मैं नहीं समझ सकता।] इस से तो उन को खुशी होनी चाहिये कि हिन्दी बढ़ रही है। मैं नहीं समझता कि हिन्दी वाले साहिबान को क्यों ऐतराज है।

श्री रामसेवक यादव : शायद यह मामला ज्यादा साफ हो जाए। अभी शिक्षा मंत्री जी ने कहा कि कुछ दक्षिण भारतीय विद्यार्थी हिन्दी सीखना चाहते हैं उन की सुविधा के लिए यह किया गया है। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या वहां केवल इन्हीं विद्यार्थियों को पढ़ाई जाती है या जो और गैर हिन्दी इलाकों के विद्यार्थी हैं उनको भी पढ़ाई जाती है यदि हां, तो उन को किस तरह पढ़ायी जाती है ?

Shri M. C. Chagla : Whenever Hindi is a subject to be taught in a university, it is taught in the Devanagari script. That is the provision of the Constitution and we must all be loyal to the Constitution. But, as I said, this was a special case where some people from South India went to the vice-chancellor and said that they wanted to learn Hindi and they did not know the Devanagari script, and they enquired whether some facility could be given to them. They knew the Roman script, and, therefore, they desired to learn it through the Roman script. As you have said the House should welcome this. And I am surprised . . .

श्री रामसेवक यादव : मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं आया।

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने ने जवाब दे दिया जहां लाजिमी तौर से पढ़ायी जाए, वहां देवनागरी लिपि में पढ़ायी जाए।

Shrimati Savitri Nigam : May I know whether it is a fact that the Mudaliar Committee had made certain recommendations to raise the standard of the universities, and whether those recommendations are going to be adopted in these Central universities or not?

Shri M. C. Chagla : I am not aware of the Mudaliar Committee having made any recommendations about university education; I think that was with regard to secondary education.

Shri S. C. Samanta : In case of continued internal troubles in these universities, what steps are the Central Government entitled to take?

Shri M. C. Chagla : My hon. friend knows that in the case of the Banaras University, a committee was appointed and so also in the case of the Aligarh University. The Central Government have powers of inquiry and investigation which are exercised by the Visitor on the advice of the Ministry of Education.

Shri Hem Barua : I come from a non-Hindi-speaking area. But I fail to understand what you, Sir, have said and what the hon. Minister has said. Here is a group of students who are willing to learn Hindi in the Roman script, and the university has made provision for that. The university is utilising the finances given to it by the Central Government. But according to the Constitution, Hindi should be taught in the Devanagari script. . .

Shri Daji : No.

Shri Hem Barua : It should be taught in the Devnagari script.

Shri M. K. Kumaran: He is mixing up two different things.

Shri Raghunath Singh: Why should English not be taught in the Devnagari script?

Shri Hem Barua: When the finances are allotted by the Central Government and the university utilises these finances to teach Hindi to these students, why is it that they have not taught it in the Devanagari script, and why have they decided to go against the pattern that is established in the country that Hindi should be taught in the Devanagari script? I do not understand that.

Shri D. C. Sharma: On a point of order. After you have given your ruling on the subject and after you have clarified the situation to the satisfaction of the House, has any hon. Member the right to raise the same question again?

Mr. Speaker: I tried to make it clear, but probably my explanation was not satisfactory and my words were not so clear, and, therefore, Shri Hem Barua questions that.

Shri Hem Barua: It is difficult for us to understand it.

Shri D. C. Sharma: Again, he is interrupting you.

Mr. Speaker: The hon. Member has to live with the limitations of my intellect, my wisdom and my language and whatever capacity I have. But I fail really to understand why Members here should object to Hindi being taught in the Roman script, when there are some students who are not bound to learn it, and for whom it is not compulsory to learn it, but who want to learn it. Whenever Hindi as a subject is required to be taught, then those students are taught Hindi in the Devanagari script. But over and above that, if some students express a desire that they

might also try to learn it and begin learning it through a script which they know, should the Hindi-speaking Members be satisfied with that or should be glad over it or should they have any objection to it? That I fail to understand.

श्री रघुनाथ सिंह : अगर हम अंग्रेजी देवनागरी स्क्रिप्ट में पढ़ना चाहें तो क्या हम लोगों के बास्ते भी इन्तिजाम होगा ?

अध्यक्ष महोदय : अगर कोई पढ़ना चाहे तो उस में क्या रुकावट हो सकती है ।

Shri Daji: Do I understand correctly that these classes are held or this help is given outside the regular courses of the university as a private arrangement?

Shri M. C. Chagla: That is quite so. I am very grateful to the Speaker for clarifying the matter.

श्री यशपाल सिंह : अभी माननीय शिक्षा मंत्री ने कहा कि अगर मैजस्ट्री चाहें तो "बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय" में "हिन्दू" शब्द हटा दिया जाएगा और "अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय" में "मुस्लिम" शब्द हटा दिया जाएगा । पर यह बात तो सिक्यूलरिज्म के खिलाफ है, धर्म का दर्जा मैजस्ट्री से बहुत ऊंचा है । क्या माननीय मंत्री जो इस बात पर गौर करेंगे कि अलफाज जो कहे गए हैं, ये सिक्यूलरिज्म के खिलाफ कहे गए हैं । क्या इन शब्दों से उन लोगों को जिन को "हिन्दू" या "मुस्लिम" शब्दों से प्रेम है को ठेस नहीं पहुंचेगी ।

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने ने कहा कि जब ऐसी मांग की जावेगी ।

श्री यशपाल सिंह : उन्होंने ने फरमाया कि मैजस्ट्री चाहें तो हटा सकती है । क्या यह फरमाना ही सिक्यूलरिज्म के खिलाफ नहीं है ?

Shri M. C. Chagla: My hon. friend knows that we must bow to the majority of Parliament. We are responsible to Parliament, and if the majority expresses a particular desire, we must bow to it. My idea of secularism is that we should not emphasise the communal aspect of anything. That does not mean that you should not learn ethical principles or, what my hon. friend calls, righteousness or, if I may use a Hindu expression, dharma. That does not, again, mean that you should emphasise the fact that a particular university is Hindu and a particular university is Muslim. But I say that I shall abide by the decision of the majority of this House.

Shri Shinkre: If I heard the hon. Minister of State correctly, he had said a little while ago . . .

An Hon. Member: Deputy Minister

Shri Shinkre: I would like him to be Minister of State.

He mentioned a little while ago that the language question is *vicharadheen*, that is, under study.

Shri Raghunath Singh: Under consideration.

Shri Shinkre: In this context, in view of the fact that even today there are too many important personages in the country, educationists included, who are advocating the cause of the Roman script as a universal common script for the languages of the country, Hindi included, does this half-hearted attitude of Government towards the use of Hindi in Roman script reflect any doubt in their mind as to the eventual adoption of a script different from Devanagari for Hindi?

Shri M. C. Chagla: Government must act loyally to the Constitution. So long as the Constitution says that the official language of India is Hindi in the Devanagari script, the duty of Government is to propagate Hindi in the Devanagari script. But there is

nothing to prevent people from experimenting with any other script to find out what the position is. This is a free country. But as far as Government policy is concerned, it must be consistent with the Constitution.

Shrimati Renuka Ray: In reply to a question, the hon. Minister stated that a certain amount of autonomy was given to the universities. Is he aware that Delhi University has laid down conditions that those colleges like the Lady Irwin College, run by pioneer social welfare organisations such as the All-India Women's Conference Fund Association, have to disassociate themselves from the parent body in order to draw their grants? If so, what is Government's reaction thereto?

Shri M. C. Chagla: I do not know this. If the hon. lady Member will write to me, I will make enquiries.

श्री रामेश्वरानन्द : मेरा निवेदन है कि आप ने अभी कहा कि यदि दूसरे विद्यार्थी जो हिन्दी नहीं जानते वे रोमन लिपि में सीखें तो प्रसन्नता होती चाहिये । मैं आप की सेवा में निवेदन करना चाहता हूँ कि हिन्दी को कभी भी रोमन लिपि में नहीं सिखाया जा सकता, क्योंकि इस लिपि में उतने अक्षर ही नहीं हैं । अक्षरों के अभाव में हिन्दी का सत्यानाश हो जाएगा । और वह केवल इसलिए रोमन लिपि में नहीं सिखाया जा रहा है कि वे दक्षिण के विद्यार्थी हैं, बल्कि इसलिए रोमन लिपि में सिखाया जा रहा है कि हिन्दी का सत्यानाश हो जाए ।

Rural Institutes

+

{ **Shri S. C. Samanta:**

{ **Shri Subodh Hansda:**

{ **Shri D. N. Tiwary:**

{ **Shri Daljit Singh:**

{ **Shri Sham Lal Saraf:**

*858. { **Shri P. R. Chakraverti:**